

## श्रम संहिता: इसमें नहिति समस्याएँ

### संदर्भ

हाल ही में केंद्र सरकार ने 44 श्रमिक नयिमों को 4 संहिताओं से प्रतस्थापित करने की पेशकश की। ये चार संहिताएँ हैं: वेतन संहिता, औद्योगिक संबंध संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता तथा पेशागत सुरक्षा, स्वास्थ्य व कार्य शर्त संहिता।

- इस संबंध में ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिनके जवाब अभी तक नहीं मलि पाए हैं, उदाहरण के तौर पर क्या ये संहिताएँ श्रमिकों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करती हैं? क्या ये श्रमिकों के गरमिपूरण जीवन स्तर को बनाए रख सकती हैं?
- यहाँ यह नरिदेशित करने की जरूरत है कि वास्तविक श्रमिक नयिमों को दशकों के संघर्ष के बाद बनाया गया था ताकि श्रमिकों की गरमि को सुनश्चिति कया जा सके। ऐसे में ये नए बदलाव कतिने सार्थक और प्रभावी साबित होंगे यह वचिारणीय है।

### संहिताओं की उपयोगति एवं लाभ

कसी भी देश की आर्थिक प्रगतिके लये उद्योगों का विकास होना आवश्यक है वशिषकर वनरिमाण क्षेत्र में, जो अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक श्रमिक गहन होता है। यदि श्रम कानून में बाजार और श्रमिकों के जरुरी हतियों का ध्यान नहीं रखा जाता है तो ऐसे उद्योगों का सीमति विकास ही हो पाता है। यदि कानून अधिक श्रमिकोन्मुख होते हैं तो जहाँ एक ओर उद्योगों के कार्यकरण एवं उत्पादन के प्रभावति होने की संभावना बढ़ जाती है वही दूसरी ओर यदि श्रम कानून को नज्ी क्षेत्र को ध्यान में रखकर बनाया जाता है तो श्रमिकों का शोषण होने की संभावना बनी रहती है। इसी वचिार को आधार बनाकर प्रायः श्रम कानून का नरिमाण कया जाता है।

### संहिताओं के साथ समस्याएँ

- ये संहिताएँ श्रमिकों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा और उनके गरमिपूरण जीवन स्तर की वरिधी हैं।
- वास्तविक श्रम कानून को दशकों के संघर्ष के बाद बनाया गया था ताकि श्रम करने वाले लोगों की गरमि सुनश्चिति की जा सके।
- श्रम मंत्रालय ने न्यूनतम वेतन स्तर 178 रुपए करने का प्रस्ताव रखा है जो ककिसी प्रस्तावति मानदंड या अनुमान की वधिसे वहीन है।
  - यह पूँजी और नविश को भी आकर्षति करने हेतु राज्यों के मध्य प्रतसिपरद्धा को बढ़ावा दे सकता है।
  - इसे 'भुखमरी वेतन' कहा जा रहा है, जबकि मंत्रालय की स्वयं की समति ने न्यूनतम वेतन 375 रुपए करने का सुझाव दया था।
- श्रमबल का 95 प्रतशित हसिसा जो क असंगठति है, इन संहिताओं द्वारा उपेक्षति है जबकि इन्हें कानूनी सुरक्षा की सबसे ज्यादा जरूरत है।
- इनमें यह सुनश्चिति नहीं कया गया है क एक नयिकता, कर्मचारी या उद्यम से संबंधति नरिणयों हेतु प्रावधान कौन करेगा?
- न्यूनतम वेतन अधिनयिम प्रावधान करता है क प्रशकियुओं को कर्मचारी नहीं माना जाएगा।
  - साक्ष्यों से यह जानकारी प्राप्त होती है क प्रशकियु अनुबंध के तहत कार्य करते हैं तथा वे स्थाई कर्मचारी भी होते हैं।
- संहिता में '15 वर्ष से कम उम्र कर्मचारी' के बारे में एक प्रावधान है जसिका तात्पर्य बाल श्रम को वैध करने से संबंधति हो सकता है। अर्थात् स्पष्टता का अभाव है।
- वेतन संहिता श्रम के संवदिात्मक रूप को खतम करने की जगह उसे वैध और प्रोत्साहति करती है।
- वेतन संहिता ने 'वसूली योग्य अग्रमि राशिके प्रावधान को पुनः शामिल कया है जो क सर्वोच्च न्यायालय द्वारा घोषति बलपूरवक और बंधुआ मजदूरी से जुडा हुआ है। अतः अग्रमि भुगतान द्वारा पीड़ति एवं संवेदनशील प्रवासी श्रमिक कार्य से बंध जाएंगे।
- संहिता में 8 घंटे के कार्यदविस को समाप्त कर दया गया है तथा ओवरटाइम बढ़ाने से संबंधति कई प्रावधान जोड़े गए हैं।
- यह नयिकताओं को बोनस भुगतान में टाल मटोल का अवसर भी प्रदान करता है।

### नषिकर्ष

सुरक्षा, स्वास्थ्य सुवधिएँ और कार्यस्थलों में कामकाज की बेहतर स्थतियिँ श्रमिकों के कल्याण के साथ ही देश के आर्थिक विकास के लये भी पहली शर्त होती है। देश का स्वस्थ कार्यबल अधिक उत्पादक होगा और कार्यस्थलों में सुरक्षा के बेहतर इंतजाम होने से दुर्घटनाओं में कमी आएगी जो कर्मचारियों के साथ ही नयिकताओं के लये भी फायदेमंद रहेगा। हालाँकि यहाँ इस बात पर भी गौर कये जाने की आवश्यकता है क अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से श्रमिक अधिकारों में वृद्धि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। लेकिन आर्थिक वशि्लेषक यह भी मानते हैं क यदि श्रमिक अधिकार एवं उनकी समस्याओं को एक उचित मंच प्रदान नहीं कया जाएगा तो धीरे-धीरे यह नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करेगा। इसके अतरिकित कसी भी लोकतांत्रिक देश में प्रत्येक व्यक्तिको अभवियक्तिकी स्वतंत्रता का अधिकार होता है, कुछ वशिष मामलों को छोड़कर औद्योगिक संस्थान भी इसके दायरे में आते हैं। इसी वचिार के आधार पर

श्रमिक संगठनों एवं हड़ताल को वैधानिक मान्यता दी जाती रही है ।

**स्रोत: द हट्टि**

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/code-red-for-labour>

